संपादकीय की ऐवज़ में

'लाल सलाम' के वर्तमान अंक में हम भारत की कम्युनिस्ट लीग की 5वीं कान्फ्रेंस के दस्तावेज प्रस्तुत कर रहे हैं। भारत की कम्युनिस्ट लीग की 5 वीं कान्फ्रेंस 15 जून से 21 जून 2002 के बीच सम्पन्न हुई। इस कान्फ्रेंस ने वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय-राष्ट्रीय परिस्थिति, सर्वहारा वर्ग की विचारधारा, अखिल भारतीय पार्टी के गठन, हमारे पूर्व-पार्टी संगठन की सांगठनिक-लाइन, सांगठनिक-रिपोर्ट, समकालीन घटनाओं पर राजनीतिक प्रस्ताव इत्यादि अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श किया और दस्तावेज पारित किये। इससे पहले सितम्बर 1998 में भारत की कम्युनिस्ट लीग की चौथी कान्फ्रेंस हुई थी और जून 1997 में तीसरी कान्फ्रेंस। परन्तु ये दोनों ही सम्मेलन हमारे पार्टी-संगठन के भीतर उठे गम्भीर मतभेदों के निपटारे के लिये आयोजित किये गये थे और उन्होंने राष्ट्रीय -अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य का कोई नया मूल्यांकन नहीं किया, इन्होंने दूसरे सम्मेलन (1987) की अवस्थितियों का पुनःअनुमोदन किया।

भारत की कम्युनिस्ट लीग के नेतृत्वकारी निकाय के बतौर पुनर्गठन कमेटी का गठन चौथी कान्फ्रेंस (1998) में तब हुआ जब तत्कालीन नेतृत्व ने इस सम्मेलन का सामना नहीं किया। इस सम्मेलन के पहले तीसरे सम्मेलन (1997) में तत्कालीन नेतृत्व ने हिस्सेदारी की थी और अनसुलझे सांगठनिक विवाद को सुलझने के लिये 1998 में सम्मेलन किया जाये, इस बात पर उसकी पूर्ण सहमति थी। परन्तु दो सम्मेलनों के बीच में तत्कालीन नेतृत्व ने पार्टी-संगठन के ढांचे में बुनियादी फेरबदल किया, उसे एक गैर-लेनिनवादी रूप दिया और आगामी सम्मेलन से न केवल स्वयं किनारा काटा बल्कि कुछ अन्य साथियों को भी ऐसा करने के लिये उकसाया और वे एक हद तक संगठन में तोड़-फोड़ करने में सफल भी रहे। भारत की कम्युनिस्ट लीग के चौथे सम्मेलन (1998) में पुनर्गठन कमेटी का गठन पार्टी-संगठन को इस संकटग्रस्त स्थिति से उबारने के लिये किया गया। पुनर्गठन कमेटी ने इस दिशा में प्रयास किये और एक हद तक सफलता भी पाई।

का. रामनाथ के नेतृत्व में संगठित धड़े ने 1998 के सम्मेलन के दो माह बाद अपनी ओर से पार्टी-संगठन में फूट की औपचारिक घोषणा भी कर दी। दो वर्षों से अधिक अवधि तक चले इस दो लाइन संघर्ष को आगे बढ़ाने और उसके सही निपटारे से इस तरह के दांव-पेंच से किनारा काटा गया। इस दो लाइन संघर्ष में का. रामनाथ पार्टी कार्यों के सार-संकलन एवं अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के इतिहास के मूल्यांकन में संदर्भ रहित व्यक्ति-केन्द्रित विश्लेषण पद्धति अपना रहे थे, जबकि उनके विरोधी चिर स्थापित द्वन्द्वात्मक-भौतिकवादी प्रणाली पर जोर दे रहे थे। इन दो परस्पर

विरोधी दृष्टिकोणों की टकराहट ही दो वर्षों से लम्बे चले उक्त अन्तः पार्टी संघर्ष के मूल में थी। का. रामनाथ की अवैज्ञानिक, व्यक्ति-केन्द्रित विश्लेषण पद्धति ने उन्हें यहां तक पहुंचा दिया कि वे 1957 के घोषणा-पत्र और 1960 के वक्तव्य को ख्रुश्चेवी संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष में किये गये आवश्यक समझौतों के बजाय माओ द्वारा किये गये गैर-उसूली समझौते मानने लगे हैं। उनकी राय में माओ को 1956 में ही अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन में फूट डाल देनी चाहिये थी। प्रकारांतर से वे 1963 की महान बहस की पहली टिप्पणी (संघर्ष के इतिहास पर टिप्पणी) को रद्द करते हैं। सर्वहारा दृढ़ता व धैर्य से सात वर्षों तक संचालित संघर्ष को सही ठहराने के बजाय वे संघर्ष की अविकसित अवस्था में ही, 1956-57 में ही फूटपरस्ती की वकालत करते हैं। ऐसी पहुंच कभी भी दो लाइन संघर्ष को उसके सही निपटारे तक विकसित नहीं होने देगी। यह स्वस्थ सर्वहारा दृष्टिकोण नहीं है। कम्युनिस्ट संघर्षों के विकास से डरते नहीं हैं, वे प्रतिकूल स्थितियों को अनुकूल में बदलने के लिये संघर्ष करते हैं।

का. रामनाथ द्वारा अपनायी जाने वाली गैर-द्वन्द्ववादी, गैर-भौतिकवादी, व्यक्ति-केन्द्रित विश्लेषण प्रणाली न केवल उन्हें अपने पार्टी-संगठन के कार्यों के सार-संकलन में गलत नतीजों तक ले जाती है बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के इतिहास के बारे में कई गलत निष्कर्षों तक भी ले जाती है इसकी अनेक अभिव्यक्तियां हैं मसलन, द्वितीय विश्व युद्ध की जटिल-उलझी हुई परिस्थिति एवं घटक कम्युनिस्ट पार्टियों की स्थितियों को दरकिनार कर यह मानना कि तीसरे इंटरनेशनल के विलयन में स्तालिन के प्रति माओ की 'एलर्जी' की भूमिका है। या फिर यह मानना कि 1967 में 'पीपुल्स डेली' में छपे लेख 'भारत में वसंत का वज्रनाद' के द्वारा माओ ने भारत में भारतीय क्रांति की रणनीति पर स्वस्थ बहस का गला घोंट दिया इत्यादि। का. रामनाथ के ऐसे निष्कर्ष आत्मगत होने के साथ कम्युनिस्ट आंदोलन के लिये नुकसानदायक भी हैं। इस व्यक्ति-केन्द्रित विश्लेषण प्रणाली के तहत अपने पार्टी-संगठन के कार्यों व इतिहास का जो सार-संकलन उन्होंने 1997 में तीसरे सम्मेलन की 'राजनैतिक-सांगठनिक रिपोर्ट' में पेश किया है वह भी इसी तरह एकांगी, आत्मगत, गलत एवं निरूत्साहित करने वाला है। का. रामनाथ की विश्लेषण पद्धति की उक्त मूल दिक्कत के साथ-साथ, उनसे हमारा मुख्य विरोध इस बात पर था कि संगठन में अनौपचारिक-तदर्थ कार्यशैली चलाने के बजाय पार्टी-संगठन का औपचारिक ढांचा खड़ा किया जाये और औपचारिक कार्यशैली अपनायी जाये, कि औपचारिक जन-संघर्ष खड़े किये जायें और जन संघर्ष को विकसित किया जाये और इन पर आधारित पार्टी-निर्माण किया जाये, कि पार्टी कोर के सुदृढ़ीकरण के लिये आत्मभर्त्सना की आध्यात्मिक कार्यशैली अपनाने के बजाय सिद्धांत-व्यवहार का वैज्ञानिक समन्वय किया जाये।

का. रामनाथ की उक्त लाइन के खिलाफ संघर्ष की उपज है पुनर्गठन कमेटी, भारत की कम्युनिस्ट लीग। 'लाल सलाम' इसका मुख-पत्र है। हम मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ विचारधारा को अपना पथ-प्रदर्शक सिद्धांत मानते हैं। हमारा मूल्यांकन है कि भारत में शोषण का मुख्य रूप अर्ध-सामन्ती नहीं रहा है, कि यह पूंजीवादी हो चुका है अतः क्रांति की मंजिल नव-जनवादी क्रांति की जगह समाजवादी क्रांति हो चुकी है। कि भारतीय समाज कि अधिरचना एवं मूलाधार में सामन्ती अवशेषों के खात्मे का जनवादी कार्यभार इसी समाजवादी क्रांति के उपउत्पाद के बतौर पूरा होगा। कि भारतीय क्रांति का रास्ता दीर्घकालिक लोक-युद्ध के बजाय आम बगावत है। कि आज भारतीय क्रांति कि शक्तियां किसी अखिल भारतीय कम्युनिस्ट-पार्टी के तहत संगठित नहीं हैं, बल्कि आज भारत का कम्युनिस्ट आंदोलन अनेक पूर्व-पार्टी संगठनों के रूप में ही अस्तित्वमान है। कि आज अखिल भारतीय कम्युनिस्ट-पार्टी का गठन व निर्माण ही कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों का केन्द्रीय कार्यभार है।

'लाल सलाम' के वर्तमान अंक में हम अपनी पाचवीं कान्फ्रेंस के जो दस्तावेज पेश कर रहे हैं वे हमारी सीमित समझ व सीमित अनुभवों पर आधारित हैं ये हमारे पार्टी-संगठन एवं हमारे देश के कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन की अपरिपक्वता की अभिव्यक्ति हैं। लेकिन हमें उम्मीद है कि देश के कम्युनिस्ट क्रांतिकारी इन्हें गम्भीरता से लेंगे और हमारी लाइन की विसंगतियों व गलतियों को दूर करने के लिये हमसे खुला व सैद्धांतिक संघर्ष करेंगे। गम्भीर आलोचना/प्रत्यालोचना की प्रक्रिया से गुजर के ही हमारा आन्दोलन परिपक्व होगा और उसके अंश के तौर पर हमारा भी विकास होगा। इन्हीं सदिच्छाओं के साथ ये दस्तावेज 'लाल सलाम' के पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हैं।

❑ ❑ ❑